M. L. Vasanthakumari

Born into a family of singers, this classical Indian Carnatic vocalist was eventually known as MLV, an acronym standing for melody, laya and vidwat, three essential components of Carnatic music, which translated refer to melody, rhythmic variation and depth of feeling. She was one of a select triad of female vocalists who pushed the boundaries in a male-dominated culture, not only earning the right to perform on concert stages instead of only at private parties, but also being allowed to develop and demonstrate the ability to perform extended serious pieces from a variety of classical disciplines. Her associate female composers were the vocalists D. K. Pattammal and M. S. Subbulakshmi, together the three are widely referred to as the female Trinity of Carnatic music.

Vasanthakumari's mother was the concert performer Lalithangi. As a child, the little MLV was a support singer and also picked up training later on from the vocalist G. N. Balasubramaniam. He was her first large influence and the early stages of her music are marked by the same kind of rapid-fire phrasing and tricky rhythmic patterns that he was known for. Later in her career, she made a stylistic change and became an innovator.

Born in Chennai on 3 July 1928 to musician parents Koothanur Ayyasami Iyer and Lalithangi, Vasanthakumari was a child prodigy. Lalithangi had learnt music from Coimbatore Thayi, Flute Subba Rao and Veena Dhanammal. Iyer and Lalithangi played an important part in propagating the devarnamas of Purandaradasa and also showed keen interest in Hindustani music. Young Vasanthi naturally grew up in a wonderful musical atmosphere, listening to the songs of Purandaradasa, the Trinity and other composers and visiting Hindustani musicians.

But for the insistence of her charismatic guru, G. N. Balasubramanian, Vasanthakumari might not have become a career musician, as her parents, disappointed by lack of recognition, wanted her to pursue a proper education rather than music. She completed Senior Cambridge at school and acquired proficiency in English, developing a keen intellect that was often reflected in her music. It was G. N. Balasubramanian, who had heard her singing to herself once when he happened to be rehearsing for a programme with Lalithangi and D. K. Pattammal, who convinced them to let her learn from him.

Vasanthi started accompanying Lalithangi in her recitals from the age of 11. She gave her first solo recital in Bangalore unexpectedly in 1941, when she was barely 13, as Lalithangi had to withdraw because of an attack of asthma. Introduced that evening to the audience as Madras Lalithangi Vasanthakumari, she gradually became famous as MLV.

Vasanthakumari earnestly followed her guru's advice that she must imbibe the best attributes of his music but must not imitate her. Her raga alapana, for instance, was marked by the same step-by-step development patented by GNB. She was also outstanding in niraval, with brigas flowing effortlessly from her silvery voice. In swaraprastara, too she was creative and original, striking surprising swara combinations with utmost fluidity. She was quite at her best in the ragamalika swaras she tended to render as part of ragam-tanam-pallavi. The ragamalika could be of mainstream ragas like Kanada, Kedaram, Yadukulakambhoji and Sahana, or rarer ones like the Hindustani Tilang, Revati, Sindhubhairavi, Kalavati and Chandrakauns.

Vasanthakumari's kutcheris usually included besides ragam-tanam-pallavi, a varnam, a kriti in a major raga like Sankarabharanam, Kalyani, Bhairavi, Kambhoji, Todi or Kharaharapriya, kritis in ragas like Amritavarshini, Mohanam, Arabhi, Andolika, Hindolam or Poorvikalyani and lighter compositions following the main item, and a tillana to be sure. Her exquisite rendering of Purandaradasa songs was a major draw in her concerts.

MLV was an excellent and caring teacher who took a loving interest in the careers of her disciples. Her daughter Srividya was a talented dancer who became a highly respected actor in Tamil cinema. She made the move into film music and was in demand on soundtracks. She was awarded with many titles and honours from music organizations all over the world. Among these were a doctorate degree, the cherished Padma Bhushan from the Government of India, the title of Sangita Kalanidhi from the Madras Music Academy and many more.

Department of Posts is pleased to issue a Commemorative Postage Stamp on M. L. Vasanthakumari.

Credits:

Text	:	Based on material received from the proponent
Stamp/First Day Cover/ Brochure	:	Shri Sankha Samantha
Cancellation Cachet	:	Smt. Alka Sharma

एम. एल. वसंतकुमारी

M. L. VASANTHAKUMARI

विवरणिका BROCHURE

एम. एल. वसंतकुमारी

गायकों के परिवार में पैदा हुई इस सर्वोच्च भारतीय शास्त्रीय कर्नाटक गायिका को एमएलवी के रूप में जाना जाता था, जो माधुर्य, लय और विद्वत के लिए एक संक्षिप्त शब्द है, जो कर्नाटक संगीत के तीन आवश्यक घटक हैं, जिसका अनुवाद सुन्दरता, तालबद्ध भिन्नता और महसूस करने की गहराई को दर्शाता है। वे चुनिंदा महिला गायकों की त्रिमूर्ति में से एक थीं, जिन्होंने पुरुष–वर्चस्व की संस्कृति में अपना स्थान बनाया। केवल निजी कार्यक्रमों की बजाय उन्होंने न केवल संगीत समारोहों में प्रस्तुतीकरण के लिए अपनी जगह बनाई, बल्कि शास्त्रीय संगीत की विभिन्न विधाओं में अपनी गायन कला को विकसित किया और गंभीर रचनाओं की प्रस्तुति दी। उनकी सहयोगियों में एम. एस. सुब्बुलक्ष्मी और डी. के. पट्टम्मल जैसी गायिकाएं शामिल थीं। इन तीनों गायिकाओं को कर्नाटक संगीत की महिला त्रयी के रूप में जाना जाता है।

वसंतकुमारी की माँ संगीत कार्यक्रम कलाकार ललिथांगी थीं। बचपन में, एमएलवी ने पहले एक सहायक गायिका के रूप में काम किया। बाद में उन्होंने गायक जी. एन. बालासुब्रमण्यम से प्रशिक्षण भी प्राप्त किया। वे उनसे बेहद प्रभावित थीं और उनका आरंभिक संगीत उनकी शैली की तरह मुश्किल लयबद्ध पैटर्न द्वारा चिह्नित किया जाता है। बाद में अपने करियर में, उन्होंने एक शैलीगत बदलाव किया और वह नवप्रवर्तक बन गई।

3 जुलाई 1928 को चेन्नई में संगीतकार माता–पिता कुथानूर अय्यासामी अय्यर और ललिथांगी के घर पैदा होने वाली वसंतकुमारी बचपन से ही बहुत प्रतिभाशाली थीं। ललिथांगी ने कोयंबटूर थायी से संगीत, सुब्बा राव से बांसुरी और धनमाल से वीणा सीखी। अय्यर और ललिथांगी ने पुरंदरदास के देवरनामा का प्रचार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और हिंदुस्तानी संगीत में गहरी रूचि दिखाई। नन्ही वसंती स्वाभाविक रूप से संगीत के अद्भुत माहौल में पुरंदरदास, ट्रिनिटी और अन्य संगीतकारों के गीतों को सुनकर और हिन्दुस्तानी संगीतकारों से मुलाकातें करती हुई बड़ी हुई।

लेकिन अपने करिश्माई गुरु, जी. एन. बालासुब्रमण्यम के आग्रह के बिना, वसंतकुमारी शायद संगीत को अपना कैरियर नहीं बना पातीं, क्योंकि उनके माता–पिता, उन्हें प्रसिद्धि न मिलने से निराश थे और चाहते थे कि वह संगीत की बजाय अच्छी शिक्षा प्राप्त करे। उन्होंने स्कूल में वरिष्ठ कैम्ब्रिज पूरी की और अंग्रेजी में दक्षता हासिल की तथा ऐसी विचारशक्ति विकसित की जो अक्सर उनके संगीत में परिलक्षित होती थी। जब वसंतकुमारी, ललिथांगी और डी. के. पट्टम्मल के साथ किसी कार्यक्रम के लिए अभ्यास कर रही थी, तब जी. एन. बालासुब्रमण्यम ने उनका गीत सुना और फिर वसंतकुमारी को उनसे गायन सिखाने हेतु उनके माता–पिता को राजी किया।

वसंती ने 11 साल की उम्र से गायन प्रस्तुतियों में अपनी माता, ललिथांगी का साथ दिया। 1941 में उन्होंने बैंगलोर में अचानक अपनी पहली एकल गायन प्रस्तुति दी, जब अस्थमा से पीड़ित होने के कारण ललिथांगी गायन नहीं कर पाई। उस समय वह केवल 13 वर्ष की थीं। उस शाम उनका दर्शकों के बीच मद्रास ललिथांगी वसंतकुमारी के रूप में परिचय हुआ और वह धीरे–धीरे एमएलवी के रूप में प्रसिद्ध हो गईं।

वसंतकुमारी ने अपने गुरु की इस सलाह का मन लगाकर अनुसरण किया कि उन्हें उनके संगीत के सर्वोत्तम गुणों को आत्मसात करना चाहिए, लेकिन उनका अनुकरण नहीं करना चाहिए। उदाहरण के लिए, वसंतकुमारी के राग अलापना में जी. एन. बालासुब्रमण्यम के विशिष्ट अंदाज की झलक मिलती है। वह निरवल में भी उत्कृष्ट थीं, जिसमें उनकी मधुर आवाज से ब्रिगा सहज ही निकलते थे। स्वरप्रस्तर में भी, वह उत्कृष्टता के साथ रचनात्मक और मौलिक थी तथा उनकी आवाज में स्वरों का आश्चर्यजनक संयोजन होता था। रागम–तानम–पल्लवी के हिस्से के रूप में प्रस्तुत करते समय वे रागमलिका स्वरों में भी सर्वश्रेष्ठ थीं। रागमलिका की प्रस्तुति कानाडा, केदारम, यदुकुलाकम्भोजी तथा सहाना जैसे मुख्यधारा के राग अथवा हिन्दुस्तानी तिलंग, रेवती, सिन्धुभैरवी, कलावती और चन्द्रकौन्स जैसे कठिन रागों जैसी हो सकी।

वसंतकुमारी की कचेरी में रागम–तानम–पल्लवी के अलावा, सामान्यतः वर्णम, संकरभर्णम, कल्याणी, भैरवी, कम्भोजी जैसे प्रमुख राग में कृति अथवा तोडी अथवा खरहप्रिया, अमृतवर्षिणी, मोहनम, अरामी, अंदोलिका, हिन्डोलम जैसे रागों में कृति अथवा पूर्वीकल्याणी और गायन की मुख्य प्रस्तुति के पश्चात संगीत की हल्की प्रस्तुति तथा तिल्लाना शामिल होते थे। पुरन्दरदास के गीतों का सुन्दर प्रस्तुतीकरण उनके संगीत समारोह में संगीत प्रेमियों के लिए विशेष आकर्षण का केन्द्र होता था।

एमएलवी उत्कृष्ट कोटि की और शिष्यों का ध्यान रखने वाली शिक्षिका थीं और उनकी अपने शिष्यों के कैरियर के प्रति गहरी रुचि थी। उनकी बेटी श्रीविद्या एक प्रतिभाशाली नर्तकी थीं जो आगे चलकर तमिल सिनेमा की एक बहुत सम्मानित अभिनेत्री बनीं। उन्होंने फिल्म संगीत की दुनिया में अपना कदम बढ़ाया और साउंडट्रैक के लिए उनकी बहुत मांग थी। उन्हें दुनिया भर के संगीत संगठनों द्वारा अनेक खिताबों और सम्मानों से नवाजा गया। उन्हें मैसूर विश्वविद्यालय से डॉक्टरेट की डिग्री, भारत सरकार की ओर से पदम भूषण, मद्रास संगीत अकादमी से संगीत कलानिधि का खिताब और कई अन्य पुरस्कार प्राप्त हुए।

डाक विभाग, एम. एल. वसंतकुमारी पर स्मारक डाक टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार :

मूलपाठ	:	प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना पर आधारित
डाकटिकट / प्रथम दिवस आवरण / विवरणिका	:	श्री शंख सामंत
विरूपण मोहर	:	श्रीमती अलका शर्मा

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसा
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक–टिकटें	:	501540
Stamps Printed	:	501540
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at
http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

मूल्य: ₹ 5.00